Literacy for a Billion

Movie: Vivah
Year: 2006

Song: Samarpan ki bela
Lyricist: Ravindra Jain

समर्पण की बेला
आयी रे आयी सजनी
ये दर्पण है या तेरा मन है
यहाँ भी सजन है
वहाँ भी सजन है
मन जिसपे वारा है
तन उसपे वार दे
आज की रात के
सारे अधिकार दे
न वो अब पराया
ना अब तू परायी सजनी
ओ...
समर्पण की बेला
आयी रे आयी सजनी

ओ...
ओ...
ओ...

तुझको जी भरके मैं देखूँ
मुझे हक है
बस यूँ ही देखता जाऊँ
मुझे हक है
पिया... पिया
पिया पिया बोले मेरा जिया
तुम्हें हक है
तुम्हें हक है
तुम्हें हक है

मिल ही गई वो खुशी
थी जो हमारी भाग की
अग्नि परीक्षा देके पायी
रात ये सुहाग की
चाँद सितारें अपने मिलन की देंगे मिसाले
आज इन चराहों से
चलो ये दुवा ले
सेज फूलों की सजाओ
तुम्हें हक है
संग तुम सदियाँ बिताओ
तुम्हें हक है
पिया... हो पिया
पिया पिया बोले मेरा जिया

ढ़ल रही पिघल रही
ये रात धीरे-धीरे
बढ़ रही है प्यार की
बात धीरे-धीरे
चुडियाँ गुनगुनाके
क्या कहें सजना
ये चुडियाँ गुनगुनाके
क्या कहें सजना
रात की रात जगाऊँ
मुझे हक है
चाँद पूनम का चुराऊँ
मुझे हक है
पिया... पिया

पिया पिया बोले मेरा जिया तुम्हें हक है
तुम्हें हक है
तुम्हें हक है

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.